रविवार 18 अक्टूबर, 2020

विषय — प्रायश्चित का सिद्धांत

स्वर्ण पाठ: **मत्ती 5: 8**

"*धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।*"

उत्तरदायी अध्ययन: **2 पतरस 3: 9-14, 17, 18**

9 प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में
धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर
मिले।
10 परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता
रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाऐंगे।
11 तो जब कि ये सब वस्तुएं, इस रीति से पिघलने वाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में कैसे
मनुष्य होना चाहिए।
12 और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा
यत्न करना चाहिए; जिस के कारण आकाश आग से पिघल जाएंगे, और आकाश के गण बहुत ही
तप्त होकर गल जाएंगे।
13 पर उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिन में
धार्मिकता वास करेगी॥
14 इसलिये, हे प्रियो, जब कि तुम इन बातों की आस देखते हो तो यत्न करो कि तुम शान्ति से उसके
साम्हने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो।
17 इसलिये हे प्रियो तुम लोग पहिले ही से इन बातों को जान कर चौकस रहो, ताकि अधमिर्यों के भ्रम में
फंस कर अपनी स्थिरता को हाथ से कहीं खो न दो।
18 पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ।

पाठ उपदेश

बाइबल

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

1. लैव्यव्यवस्था 6 : 1-7

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
2 यदि कोई यहोवा का विश्वासघात करके पापी ठहरे, जैसा कि धरोहर, वा लेनदेन, वा लूट के विषय में
अपने भाई से छल करे, वा उस पर अन्धेर करे,
3 वा पड़ी हुई वस्तु को पाकर उसके विषय झूठ बोले और झूठी शपथ भी खाए; ऐसी कोई भी बात क्यों न हो
जिसे करके मनुष्य पापी ठहरते हैं,
4 तो जब वह ऐसा काम करके दोषी हो जाए, तब जो भी वस्तु उसने लूट, वा अन्धेर करके, वा धरोहर, वा
पड़ी पाई हो;
5 चाहे कोई वस्तु क्यों न हो जिसके विषय में उसने झूठी शपथ खाई हो; तो वह उसको पूरा पूरा लौटा दे,
और पांचवां भाग भी बढ़ाकर भर दे, जिस दिन यह मालूम हो कि वह दोषी है, उसी दिन वह उस वस्तु को
उसके स्वामी को लौटा दे।
6 और वह यहोवा के सम्मुख अपना दोषबलि भी ले आए, अर्थात एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि के लिये याजक
के पास ले आए, वह उतने ही दाम का हो जितना याजक ठहराए।
7 इस प्रकार याजक उसके लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे, और जिस काम को करके वह दोषी हो
गया है उसकी क्षमा उसे मिलेगी॥

2. यूहन्ना 8: 1-12, 31-34, 37, 59

1 परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया।
2 और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने
लगा।
3 तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए, जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उस को बीच में खड़ी
करके यीशु से कहा।
4 हे गुरू, यह स्त्री व्यभिचार करते ही पकड़ी गई है।
5 व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह करें: सो तू इस स्त्री के विषय में क्या
कहता है?
6 उन्होंने उस को परखने के लिये यह बात कही ताकि उस पर दोष लगाने के लिये कोई बात पाएं, परन्तु
यीशु झुककर उंगली से भूमि पर लिखने लगा।
7 जब वे उस से पूछते रहे, तो उस ने सीधे होकर उन से कहा, कि तुम में जो निष्पाप हो, वही पहिले उस को
पत्थर मारे।
8 और फिर झुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगा।

9 परन्तु वे यह सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक एक एक करके निकल गए, और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रह गई।
10 यीशु ने सीधे होकर उस से कहा, हे नारी, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझ पर दंड की आज्ञा न दी।
11 उस ने कहा, हे प्रभु, किसी ने नहीं: यीशु ने कहा, मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना॥
12 तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।
31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।
32 और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।
33 उन्होंने उस को उत्तर दिया; कि हम तो इब्राहीम के वंश से हैं और कभी किसी के दास नहीं हुए; फिर तू क्योंकर कहता है, कि तुम स्वतंत्र हो जाओगे?
34 यीशु ने उन को उत्तर दिया; मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।
37 मैं जानता हूं कि तुम इब्राहीम के वंश से हो; तौभी मेरा वचन तुम्हारे हृदय में जगह नहीं पाता, इसलिये तुम मुझे मार डालना चाहते हो।
59 तब उन्होंने उसे मारने के लिये पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया॥

3. यूहन्ना 18 : 19, 20

19 तक महायाजक ने यीशु से उसके चेलों के विषय में और उसके उपदेश के विषय में पूछा।
20 यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि मैं ने जगत से खोलकर बातें की; मैं ने सभाओं और आराधनालय में जहां सब यहूदी इकट्ठे हुआ करते हैं सदा उपदेश किया और गुप्त में कुछ भी नहीं कहा।

4. यूहन्ना 19 : 1, 17, 18 (*से 1st* ,)

1 इस पर पीलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए।
17 तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है और इब्रानी में गुलगुता।
18 वहां उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया।

5. लूका 24 : 1-3, 15, 44-47

1 परन्तु सप्ताह के पहिले दिन बड़े भोर को वे उन सुगन्धित वस्तुओं को जो उन्होंने तैयार की थीं, ले कर कब्र पर आईं।

2 और उन्होंने पत्थर को कब्र पर से लुढ़का हुआ पाया।
3 और भीतर जाकर प्रभु यीशु की लोथ न पाई।
15 और जब वे आपस में बातचीत और पूछताछ कर रहे थे, तो यीशु आप पास आकर उन के साथ हो लिया।
44 फिर उस ने उन से कहा, ये मेरी वे बातें हैं, जो मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए, तुम से कही थीं, कि अवश्य है, कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में, मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों।
45 तब उस ने पवित्र शास्त्र बूझने के लिये उन की समझ खोल दी।
46 और उन से कहा, यों लिखा है; कि मसीह दु:ख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा।
47 और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा।

6. रोमियो 5 : 8-11

8 परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।
9 सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे?
10 क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे?
11 और केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जिस के द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर के विषय में घमण्ड भी करते हैं॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 18 : 1-5, 13-15

प्रायश्चित परमेश्वर के साथ मनुष्य की एकता का उदाहरण है, जिससे मनुष्य ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम को दर्शाता है। नासरत के यीशु ने पिता के साथ मनुष्य की एकता को सिखाया और प्रदर्शित किया, और इसके लिए हम उसे अंतहीन श्रद्धांजलि देते हैं।

मसीह का प्रायश्चित मनुष्य को ईश्वर से जोड़ता है न कि ईश्वर को मनुष्य; क्योंकि मसीह का ईश्वरीय सिद्धांत ईश्वर है, और ईश्वर स्वयं का प्रचार कैसे कर सकता है?

2. 19 : 6-11

यीशु ने मनुष्य को ईश्वर की शिक्षा, यीशु की शिक्षाओं के दिव्य सिद्धांत, और प्रेम के इस तुच्छ अर्थ को मनुष्य की आत्मा, के नियम, और मृत्यु के नियम से मनुष्य की मृत्यु के रूप में समझने की कोशिश की। ईश्वरीय प्रेम का नियम।

3. 22 : 23-31

त्रुटि से अंतिम उद्धार, जिससे हम अमरता, असीम स्वतंत्रता और पापहीन भावना में आनंदित होते हैं, फूलों के रास्तों से नहीं पहुँचा जा सकता है और न ही किसी के विश्वास के बिना किसी दूसरे के काम के प्रयासों पर विश्वास करके। जो कोई भी यह मानता है कि क्रोध धर्मी है या वह देवत्व मानवीय पीड़ाओं से प्रभावित है, वह परमेश्वर को नहीं समझता।

न्याय के लिए पापी के सुधार की आवश्यकता है दया ऋण को तभी रद्द करती है जब न्याय स्वीकृत होता है।

4. 23 : 1-11

हमें पाप से बचाने के लिए बुद्धि और प्रेम के लिए स्वयं के कई बलिदानों की आवश्यकता हो सकती है। एक बलिदान, हालांकि, महान, पाप के ऋण का भुगतान करने के लिए अपर्याप्त है। प्रायश्चित के लिए पापी की ओर से निरंतर आत्म-विसर्जन की आवश्यकता होती है। भगवान के क्रोध को उनके प्यारे पुत्र पर व्रत किया जाना चाहिए, जो दिव्य अप्राकृतिक है। ऐसा सिद्धांत मानव निर्मित है। प्रायश्चित धर्मशास्त्र में एक कठिन समस्या है, लेकिन इसकी वैज्ञानिक व्याख्या है, कि दुख पाप भावना की त्रुटि है जिसे सत्य नष्ट कर देता है, और अंततः पाप और पीड़ा दोनों ही अनन्त प्रेम के चरणों में गिर जाएंगे।

5. 19 : 17-28

पश्चाताप और पीड़ा के हर दर्द, सुधार के लिए हर प्रयास, हर अच्छा विचार और काम, हमें पाप के लिए यीशु के प्रायश्चित को समझने और उसकी प्रभावकारिता की सहायता करने में मदद करेगा; लेकिन अगर पापी प्रार्थना और पश्चाताप करना, पाप करना और क्षमा करना जारी रखता है, तो उसके पास प्रायश्चित में बहुत कम हिस्सा है, — परमेश्वर के साथ एकता में, - क्योंकि उसके पास व्यावहारिक पश्चाताप का अभाव है, जो हृदय को सुधारता है और मनुष्य को ज्ञान की इच्छा करने में सक्षम बनाता है। जो लोग प्रदर्शन नहीं कर सकते, कम से कम भाग में, हमारे गुरु की शिक्षाओं और अभ्यास के दिव्य सिद्धांत का भगवान में कोई हिस्सा नहीं है। यदि उसके प्रति अवज्ञा में रहते हैं, तो हमें कोई सुरक्षा महसूस नहीं करनी चाहिए, हालांकि भगवान अच्छा है।

6. 25 : 22-31

यद्यपि पाप और बीमारी पर अपने नियंत्रण का प्रदर्शन, किसी भी तरह से महान शिक्षक ने दूसरों को अपने स्वयं के पवित्रता के अपेक्षित प्रमाण देने से राहत नहीं दी। उन्होंने उनके मार्गदर्शन के लिए काम किया, ताकि वे इस शक्ति का प्रदर्शन कर सकें, जैसा कि उन्होंने किया और इसके दिव्य सिद्धांत को समझा। शिक्षक के प्रति विश्वास और सभी भावनात्मक प्रेम हम उस पर पूरा कर सकते हैं, कभी भी हमें उसका अनुकरण करने वाला नहीं बनाएंगे। हमें इसी तरह से जाना चाहिए और करना चाहिए, अन्यथा हम उन महान आशीषों में सुधार नहीं कर रहे हैं जो हमारे मास्टर ने काम किया था और हमारे लिए सबसे अच्छा था।

7. 30 : 19-32

सत्य के व्यक्तिगत आदर्श के रूप में, ईसा मसीह सत्य और जीवन के तरीके को इंगित करने के लिए, सभी गलतियों, बीमारी, और मृत्यु - को रबिनिकल त्रुटि और फटकार के लिए आया था। आत्मा और भौतिक अर्थ, सत्य और त्रुटि के बीच अंतर दिखाते हुए, इस आदर्श को यीशु के संपूर्ण सांसारिक जीवन के दौरान प्रदर्शित किया गया था।

यदि हमने आत्मा को नियंत्रण रखने की अनुमति देने के लिए भौतिक अर्थों की त्रुटियों पर पर्याप्त रूप से विजय प्राप्त की है, तो हम पाप को कम कर देंगे और हर परिस्थिति में उसे फटकार देंगे। केवल इस तरह से हम अपने दुश्मनों को आशीर्वाद दे सकते हैं, हालांकि वे हमारे शब्दों को नहीं समझ सकते। हम अपने लिए नहीं चुन सकते हैं, लेकिन यीशु द्वारा सिखाए गए तरीके से हमारे उद्धार का काम करना चाहिए।

8. 34 : 5-17

यदि मसीह, सत्य, प्रदर्शन में हमारे पास आए हैं, तो प्रदर्शन के लिए किसी अन्य स्मारक की आवश्यकता नहीं है, प्रदर्शन के लिए इमैनुअल, या भगवान हमारे साथ हैं; और यदि कोई मित्र हमारे साथ है, तो हमें उस मित्र के स्मारक की आवश्यकता क्यों है?

अगर कभी संस्कार का हिस्सा बनने वाले सभी लोगों ने यीशु की पीड़ाओं को याद किया और उनके प्याले को पीया, तो उन्होंने दुनिया में क्रांति ला दी। यदि सभी जो भौतिक प्रतीकों के माध्यम से अपने स्मरणोत्सव की तलाश करते हैं, तो क्रूस को उठाएंगे, बीमारों को चंगा करेंगे, बुराइयों को बाहर निकालेंगे, और गरीबों को मसीह, या सत्य का उपदेश देंगे, - ग्रहणशील विचार, - वे सहस्त्राब्दी में लाएंगे।

9. 35 : 19 *केवल*, 25-29

हमारा बपतिस्मा सभी त्रुटि से शुद्धिकरण है। ... हमारा ईश्वरवादी एक ईश्वर के साथ आध्यात्मिक संवाद है। हमारी रोटी, "जो स्वर्ग से नीचे आती है," सत्य है। हमारा प्याला पार है। हमारी शराब प्रेम की प्रेरणा थी, हमारे मास्टर ने मसौदा तैयार किया और अपने अनुयायियों की प्रशंसा की।

10. 324 : 4-6

भाव और आत्म की शुद्धि ही प्रगति का प्रमाण है। “धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।”

11. 28 : 1-8

फरीसियों ने ईश्वरीय इच्छा को जानने और सिखाने का दावा किया, लेकिन उन्होंने केवल यीशु के मिशन की सफलता में बाधा डाली। यहां तक कि उनके कई छात्र भी उनके रास्ते में खड़े थे। यदि मास्टर ने एक छात्र को नहीं लिया था और भगवान की अनदेखी सत्य सिखाया था, तो उसे क्रूस पर नहीं चढ़ाया जाता था। पदार्थ की समझ में आत्मा को धारण करने का दृढ़ संकल्प, सत्य और प्रेम का उत्पीड़न करने वाला है।

12. 24 : 27-2

क्रूस की प्रभावकारिता व्यावहारिक स्नेह और भलाई में निहित है जो मानव जाति के लिए प्रदर्शित हुई। सच्चाई पुरुषों के बीच रह चुकी थी; लेकिन जब तक उन्होंने देखा कि इसने अपने गुरु को कब्र पर विजय प्राप्त करने के लिए सक्षम कर दिया है, तब तक उनके अपने शिष्य इस तरह के आयोजन को संभव नहीं मानते थे। पुनरुत्थान के बाद, यहां तक कि अविश्वासी थॉमस को यह स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया कि सत्य और प्रेम का महान प्रमाण कितना पूर्ण था।

13. 21 : 1-14

यदि सत्य आपके दैनिक चलने और वार्तालाप में त्रुटि पर काबू पा रहा है, तो आप अंततः कह सकते हैं, "मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं .... मैं ने विश्वास की रखवाली की है।" क्योंकि आप एक बेहतर इंसान हैं। यह सत्य और प्रेम के साथ एक-में-भाग में हमारा हिस्सा है। ईसाई, श्रम और प्रार्थना करना जारी नहीं रखते हैं, क्योंकि दूसरे की भलाई, पीड़ा और जीत की उम्मीद है, कि वे उसके सद्भाव और इनाम तक पहुंचेंगे।

यदि शिष्य आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ रहा है, तो वह अंदर प्रवेश करने का प्रयास कर रहा है। वह भौतिक दृष्टि से लगातार दूर होता जाता है, और आत्मा की अपूर्ण चीजों की ओर देखता है यदि वह

ईमानदार है, तो वह शुरू से ही सबसे अधिक लाभ में रहेगा, और जब तक वह खुशी के साथ अपना कोर्स पूरा नहीं कर लेता, तब तक वह हर दिन सही दिशा में थोड़ा-थोड़ा हासिल करेगा।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6